भजन आराधना
अनूप जलोटा
ॐ

कभी-कभी भगवान को भी

जाना था गंगा पार, प्रभु केवट की नाव चढ़े।
कभी-कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े॥

अवध छोड़ प्रभु वन को धाए

सियाराम लखन गंगा तट आए

केवट मन ही मन हर्षाए

घर बैठे प्रभु दर्शन पाए

हाथ जोड़कर प्रभु के आगे केवट मगन खड़े।

कभी-कभी भगवान..........

प्रभु बोले तुम नाव चलाओ

पार हमें केवट पहुँचाओ

केवट कहता सुनो हमारी

चरण धूल की माया भारी

मैं गरीब नैया मेरी नारी न होए पड़े।

कभी-कभी भगवान..........

केवट दौड़ के जल भर लाया

चरण धोए चरणामृत पाया

वेद ग्रंथ जिनके यश गाएँ

केवट उनको नाव चढ़ाए

बरसे फूल गगन से ऐसे भक्त के भाग्य बढ़े

कभी-कभी भगवान..........

चली नाव गंगा की धारा

सिया राम लखन को पार उतारा

प्रभु देने लगे नाव उतराई

केवट कहे नहीं रघुराई

पार किया मैंने तुमको अब तु मोहे पार करे

कभी-कभी भगवान..........

रंग दे चुनरिया हे गिरधारी

रंग दे चुनरिया-3
रंग दे, रंग दे, रंग दे चुनरिया
रंग दे चुनरिया ओ, हे गिरधारी-3
कोई कहे इसे मैली चदरिया
कोई कहे इसे पाप गठरिया-2
अपने ही रंग में, रंग दे मुरारी

रंग दे चुनरिया.......

मोह-माया में मन भटकाया
सुमिरन तेरा ना कर पाया-2
प्रभु ये बंधन खोलो मेरे
आया हूँ मैं द्वारे तेरे
जाऊँ कहाँ तज शरण तुम्हारी

रंग दे चुनरिया.......

ये जीवन धन तुमसे पाया
प्रभु तुम्हीं से ये स्वर पाया-2
तेरी ही महिमा गाई न कोई
मन की माला मन में सोई
सुमिरन जोत जला हितकारी

रंग दे चुनरिया.......

तुम स्वामी हम बालक तेरे
सुनो पुकार तुम्हीं हो मेरे-2
जनम-जनम का तुमसे नाता
तू ही जग का एक विधाता
एक तुम्हीं से प्रीत हमारी

रंग दे चुनरिया.......
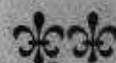
ऐसी लागी लगन, मीरा हो गई मगन

ऐसी लागी लगन, मीरा हो गई मगन;
वो तो गली-गली हरि गुण गाने लगी-2
महलों में पली बनके जोगन चली;
मीरा रानी दीवानी कहाने लगी-2

ऐसी लागी लगन........

कोई रोके नही, कोई टोके नहीं
मीरा गोविंद गोपाल गाने लगी-2
बैठी संतों के संग, रंगी मोहन के रंग
मीरा प्रेमी प्रीतम को मनाने लगी-2

वो तो गली-गली हरिगुण........

राणा ने विष दिया, मानो अमृत पिया
मीरा सरिता में सागर समाने लगी-2
दुःख लाखों सहे, मुख से गोविंद कहे
मीरा गोविंद गोपाल गाने लगी-2

वो तो गली-गली हरिगुण........
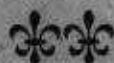
प्रश्न-उत्तर

प्रश्न- जल से पतला कौन है,
कौन भूमि से भारी?
कौन अग्नि से तेज है,
कौन काजल से कारी?
उत्तर- जल से पतला ज्ञान है,
और पाप भूमि से भारी।
क्रोध अग्नि से तेज है,
और कलंक काजल से कारी।
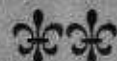
संगीत है शक्ति ईश्वर की,
हर स्वर में बसे हैं राम।
रागी जो सुनाए रागिनी,
रोगी को मिले आराम।
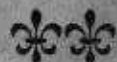
सुन नाथ अरज अब मेरी

भजन–ब्रह्मानन्द

सुन नाथ अरज अब मेरी
मैं शरण पड़ा प्रभु तेरी
तुम मानुष तन मोहे दीन्हा
भजन प्रभु तुम्हरा नहीं कीन्हा
विषयों ने मेरी मति फेरी

मैं शरण पड़ा प्रभु तेरी–सुन नाथ……

सुत दारादिक ये परिवारा
सब स्वार्थ का है संसारा
जिन हेतु पाप किए ढेरी

मैं शरण पड़ा प्रभु तेरी–सुन नाथ……

माया में ये जीव लुभाया
रूप नहीं पर तुम्हारा जाना
पड़ा जन्म-मरण की फेरी

मैं शरण पड़ा प्रभु तेरी–सुन नाथ……

भवसागर में नीर अपारा
मोहे कृपालु प्रभु करो पारा
ब्रह्मानन्द करो नहीं देरी

मैं शरण पड़ा प्रभु तेरी–सुन नाथ……

राम है जीवन, कर्म है श्याम

राम है जीवन, कर्म है श्याम।
बोलो हरे राम, बोलो हरे श्याम॥
जो नर दुःख में दुःख नहीं जाने,
नाहीं निंदा अस्तुति जाने।
काम क्रोध जिहिं परसे नाहीं,
गुरू कृपा सोही नर सुख पाहीं।
सुख का विधाता, है तेरो नाम

बोलो हरे राम, बोलो हरे श्याम……

कोटि देव जाको जस गावें,
विद्या कोटि पार न पावें।
अगम अपार पार नहीं जाको,
नाम सुमिर सब जन सुख ताको।
अगम पंथ है राम और श्याम,

बोलो हरे राम, बोलो हरे श्याम……
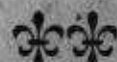
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी

भजन- भक्त रविदास

प्रभु जीऽ······· प्रभु जीऽ·······
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी
जाकी अंग-अंग बास समाना
प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा
जैसे चितवत चंद्र चकोरा-

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी।

प्रभु जी तुम दीपक हम बाती
जाकी जोत बरे दिन राती-

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी।

प्रभु जी तुम मोती हम धागा
जैसे सोने में मिलत सोहागा-

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी।

प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा
ऐसे भक्ति करे 'रहदासा'

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी।
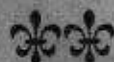
वो कान्हा इक बाँसुरी वाला

वो कान्हा इक बाँसुरी वाला
सुध बिसरा गया मोरी रे
वो कान्हा इक बाँसुरी वाला
सुध बिसरा गया मोरी रे
माखन चोर जो नंदकिशोर वो
कर गयो मन की चोरी रे

सुध बिसरा गया मोरी रे·······

पनघट पे मोरी बहियाँ मरोड़ी
मैं बोली तो मेरी मटकी फोड़ी
पइयाँ परूँ करूँ विनती मैं पर
माने न इक वो मोरी रे

सुध बिसरा गया मोरी रे·······

छुप गयो फिर इक तान सुना के
कहाँ गयो इक बाण चला के
गोकुल ढूँढा मैंने मथुरा ढूँढी
कोई नगरिया न छोड़ी रे

सुध बिसरा गया मोरी रे·······

वो कान्हा इक बाँसुरी वाला

चदरिया झीनी रे झीनी

भजन–कबीरदास

"कबीरा जब हम पैदा हुए जग हँसे हम रोए।
ऐसी करनी कर चलो हम हँसे जग रोए॥

चदरिया झीनी रे झीनी
झीनी रे झीनी झीनी झीनी
राम नाम रस भीनी चदरिया

झीनी रे झीनी......

अष्ट कमल का चरखा बनाया
पाँच तत्त्व की पूनी
नौ-दस मास बुनन को लागे
मूरख मैली कीनी चदरिया

झीनी रे झीनी चदरिया......

जब मोरी चादर बन घर आई
रंगरेज को दीनी
ऐसा रंग रंगा रंगरेज ने
कि लालो-लाल कर दीनी चदरिया

राम नाम रस पीनी चदरिया......

चादर ओढ़ शंका मत करियो
ये दो दिन तुम को दीनी
मूरख लोग भेद नहीं जाने
दिन-दिन मैली कीनी चदरिया

झीनी रे झीनी....

ध्रुव प्रहलाद सुदामा ने ओढ़ी
शुकदेव ने निर्मल कीनी
दास कबीर ने ऐसी ओढ़ी
ज्यूँ की त्यूँ धर दीनी चदरिया

झीनी रे झीनी....
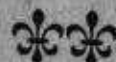
जै सियाराम राम : जै राधेश्याम श्याम

"तन तम्बूरा, तार मन, अद्भुत है ये साज
हरि के कर से बज रहा हरि की है आवाज
तन के तम्बूरे में दो साँसों के तार बोले
जै सियाराम राम जै राधेश्याम श्याम
अब तो इस तन के मंदिर में
प्रभु का हुआ बसेरा-२
मगन हुआ मन मेरा छूटा जनम २ का फेरा
मन की मुरलिया में उनका श्रृंगार बोले

तन के तम्बूरे में.........

जै सियाराम राम जै राधेश्याम श्याम
लगन लगी लीलाधारी से जगी रे जगमग जोती
राम नाम का हीरा पाया श्याम नाम का मोती
प्यासी दो अंखियों में आँसुओं की धार बोले-
जै सियाराम राम जै राधेश्याम श्याम

तन के तम्बूरे में.........
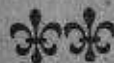
जय हो भोलेनाथ

जय हो भोलेनाथ : जय हो भंडारी
हे ! जय हो भोलेनाथ : जय हो ! भंडारी
जय हो कैलाशपति, जय हो त्रिपुरारी

जय हो भोले.........

बम भोला, बम भोला, बम भोला ऽऽ-२
दुखियों के तूने काज संवारे-२
जो भी आया भगवन तेरे दुवारे-२
हे ! कर दिया कल्याण उसका-२ कल्याणकारीऽऽ-

जय हो भोले.........

बम भोला, बम भोला, बम भोला ऽऽ-२
तेरी जटाओं में गंगा का पानी-२
गंगा के पानी से शक्ति रुहानी-२
हे ! मस्तक का चन्द्रमा-२ पीर हरे सारी

जय हो भोले.........

बम भोला, बम भोला, बम भोला ऽ-२
तन पे भभूत रमी, नागों की माला-२
दो नैनों में मस्ती, तीसरे में ज्वाला-२

हे ! दर्शनों की भीख माँगे-२
दर्शनों की भीख माँगे तेरे भिखारी

जय हो भोले.........

बम भोला, बम भोला, बम भोला ऽ-२
हँस-हँस के धरती का विष पीने वाले-२
हे भोलेनाथ! महादेव!! नीलकंठ त्रिपुरारी!!!
महादेव नीलकंठ सब से निराले-२
ये सृष्टि है गाए सारी उपमा तिहारी-२

जय हो भोले.........

बम भोला, बम भोला, बम भोला ऽ-२
हे भोलेनाथ जोगी तेरे दर पे आया
तू हो गया उसके साथ
हे भोलेनाथ ! हे भण्डारी रे
हे महादेव नीलकंठ !!

हे त्रिपुरारी रे.........

जय हो भोलेनाथ, हे भोलेनाथ, भोलेनाथ

कीर्तन ध्वनि

१. श्री मन्नारायण नारायण नारायण।

२. भज गोविंद भज गोविंद भज गोविंद मूढ़मते।

३. राम नाम लिख डार सिला तर जाएगी।
भज ले सीताराम मुक्ति हो जाएगी।

४. भज मन गोविंदे भज मन राम,
गंगा तुलसी सालिग्राम।

५. रघुपति राघव राजाराम, पतितपावन सीताराम

६. जयति शिवा शिव जानकीराम,
जय यदुनन्दन राधेश्याम।

७. देवकी नन्दन जय कृष्ण मुरारी, राधावल्लभ कुंजबिहारी।

८. वृन्दावनचन्द भजो जै राधे गोविंद।

९. जय नन्दनन्दन जय राधेश्याम।

१०. जय मीरा के गिरधर नागर सूरदास के श्याम।
जय नरसी के साँवलिया, हो तुलसीदास के राम॥
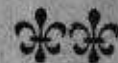
सीता के राम

गीतकार–सरस्वती कुमार दीपक

सीता के राम, राधा के श्याम,
मीरा के गिरधर नागर, सूर के घनश्याम,

महलों का सुख छोड़ सिया ने राम का साथ निभाया,
लक्ष्मी ने धर रूप सिया का जग का पाप मिटाया,
बना दिया था इस धरती को राम भक्ति का धाम।
सीता के राम............

राधा ने श्री श्याम सुन्दर संग ऐसा रास रचाया,
तीन लोक में श्याम और राधा का रूप समाया
कोटि-कोटि भक्तों के मुख पर राधेश्याम का नाम।
सीता के राम............

मीरा ने महलों की झूठी महिमा को ठुकराया,
तोड़ जगत के बंधन अपने गिरधर को अपनाया,
प्रेम दीवानी मीरा को करते हैं भक्त प्रणाम।
सीता के राम............

सीता, राधा और मीरा के सबसे न्यारे स्वामी,
सबके न्यारे सबके प्यारे स्वामी अन्तरयामी,
सदा बनाया करते प्रभु जी सबके बिगड़े काम।
सीता के राम............

प्रबल प्रेम के पाले पड़कर

भजन–बिंदु जी

प्रबल प्रेम के पाले पड़कर
भक्त प्रेम के पाले पड़कर
प्रभु को नियम बदलते देखा
अपना मान टले टल जाए,
पर भक्त का मान न टलते देखा।

जिसकी केवल कृपा दृष्टि से,
सकल विश्व को पलते देखा।
उसको गोकुल में माखन पर,
सौ-सौ बार मचलते देखा।
अपना मान टले........

जिसका ध्यान विरंचि शम्भु,
सनकादिक न संभलते देखा।
उसको ग्वाल सखा मंडल में,
लेकर गेंद उछलते देखा।
अपना मान टले........

सुरेश दिनेश गणेश महेश,
ध्यान धरें पर पार न पाएँ।
ताको ब्रज की छोहरियाँ,
छछिया भर छाछ पे नाच नचाएँ।

अपना मान टले·······

जिनके चरण कमल कमला के,
करतल से न निकलते देखा।
उनको ब्रज की कुंज गलिन में,
कंटक पथ पर चलते देखा।

अपना मान टले·······
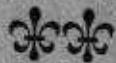
राम कथा में वीर जटायु

गीतकार– नंदकिशोर दूबे

राम कथा में वीर जटायु का,
अपना अनुपम स्थान।
तुलसी ने बड़भागी कहकर,
किया जटायु का यशगान।

राम कथा में वीर·······

सीता हरण समय रावण से,
युद्ध किया वीर गति पाए।
शूरवीर शरणागत रक्षक,
धर्म प्राण त्यागी कहलाए।
परहित में अपने प्राणों का,
धर्मवीर करते बलिदान।

राम कथा में वीर·······

अंत समय बोले रघुवर,
लो अमर तुम्हें कर देता हूँ।
कहे जटायु नहीं तात,
बस मुक्ति का वर लेता हूँ।
मोक्ष मार्ग पर राम रूप में,
महाप्राण का महाप्रयाण।

राम कथा में वीर·······

प्राण विहीन देह गोदी में,
लिए राम करुणा बरसाए।
कमल नयन की अश्रुधार से,
प्रभु अंतिम स्नान कराए।
ऋणी रहूँगा गिद्धराज का,
लक्ष्मण से बोले भगवान।

राम कथा में वीर·······

त्रेता युग के अवतारी नर,
अपने हाथों चिता रचाकर।
मात पिता सम अग्नि दाह दे,
त्रिभुवन के स्वामी करुणाकर।
साधु जटायु धन्य जटायु,
महाभाग स्तुत्य महान।

राम कथा में वीर·······
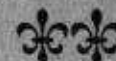
श्री राम लखन ले व्याकुल मन

भजन–माया गोविंद

श्री राम लखन ले व्याकुल मन,
कुटिया में लौट जब आए।
नहीं पाई सिया अकुलाए, नैन भर लाए–
श्री राम लखन ले व्याकुल मन,
कुटिया में लौट जब आए।
सूनापन इतना गहरा था,
श्री राम का जी घबराया।
सारे पिंजरे थे खुले,
एक पंछी भी नज़र नहीं आया।
थे धूल-धूल कलियाँ और फूल,
थे पात-पात मुरझाए।
श्री राम लखन ले..............

सीता के कुछ आभूषण,
पथ पर इधर-उधर बिखरे थे।
अन्याय और दुःख भरी सिया की,
करुण कथा कहते थे।
शोभा सिंगार इक चंद्रहार,
देखा तो राम अकुलाए।
राम लखन ले..............

आँसू का सागर उमड़ पड़ा,
सुध बुध भूले रघुनंदन।
ये हार मेरी सीता का न हो,
पहचानो सुमित्रानंदन।
तब चरण पकड़ कर सिसकी भर-भर,
लक्ष्मण ने भेद बताए।
श्री राम लखन..............

कैसे बतलाऊँ क्षमा करो,
भैया ये हार न देखा।
मैंने जब भी देखा,
भाभी के चरणों को ही देखा।
वो लाल वर्ण भाभी के चरण,
मेरे तीर्थ धाम कहलाए।
श्री राम लखन..............
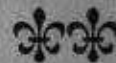
चीर के छाती बोले अपनी

गीतकार–सुभाष जैन 'अंजाल'

चीर के छाती बोले अपनी पवन पुत्र हनुमान।
मेरे मन में बसे हैं राम,
मेरे तन में बसे हैं राम।
सीता हरण किया रावण ने,
प्रभु जी थे अकुलाए।
हनुमान ने सीता जी को,
प्रभु संदेश सुनाए।
हनुमान जी करते आए प्रभु जी के गुणगान
मेरे मन में बसे............

लगी लक्ष्मण जी को शक्ति,
देख प्रभु घबराए।
भोर से पहले हनुमान जी,
द्रोणागिरी ले आए।
उठ बैठे लक्ष्मण जी लेकर श्रीराम का नाम।
मेरे मन में बसे............

वानर सेना देख के,
रावण की सेना घबराई।
पलक झपकते हनुमान ने,
लंका में आग लगाई।
बोले प्रभु के साथ मिटाकर रावण का अभिमान
मेरे मन में बसे............

राधा ऐसी भई की श्याम की दीवानी

गीतकार–माया गोविंद

राधा ऐसी भई की श्याम की दीवानी
कि ब्रज की कहानी हो गई।
एक भोली भाली गाँव की ग्वालन,
वो पंडितों की बानी हो गई।

राधा ऐसी भई............

राधा न होती तो वृंदावन भी
वृंदावन न होता।
कान्हा तो होते, बंसी भी होती,
बंसी में प्राण न होता।
प्रेम की भाषा जानता न कोई,
कन्हैया को योगी मानता न कोई।
बिना परिणय के वो प्रेम की पुजारन,
कान्हा की पटरानी हो गई।

राधा ऐसी भई............

राधा की पायल न बजती,
तो मोहन ऐसे न रास रचाते।

निंदिया चुरा कर मधुबन बुलाकर,
उँगली पे किसको नचाते।
क्या ऐसी खुशबू चंदन में होती,
क्या ऐसी मिश्री माखन में होती।
थोड़ा सा माखन खिला के वो ग्वालन,
अन्नपूर्णा सी दानी हो गई।

राधा ऐसी भई..............

राधा न होती तो कुंज गली भी
ऐसी निराली न होती।
राधा के नैना न रोते तो,
यमुना ऐसी भी काली न होती।
सावन तो होता, झूले न होते,
राधा के संग नटवर झूले न होते।
सारा जीवन लुटा के वो भिखारन,
धनिकों की राजरानी हो गई।

राधा ऐसी भई..............

राधा के बिना श्याम आधा

गीतकार–सरस्वती कुमार दीपक

श्याम राधे कोई न कहता,
कहते राधेश्याम।
जनम-जनम के भाग जगा दे,
इक राधा का नाम।

बोलो राधे..........

राधा के बिन श्याम आधा,
कहते राधेश्याम।
जनम-जनम के भाग जगा दे,
इक राधा का नाम।
बोलो राधे बोलो राधे,

बोलो राधे..........

बोलो राधे राधे राधे बोलो राधे।
व्यर्थ पड़ा माला बिन मोती,
व्यर्थ रही दीपक बिन ज्योति।
चंदा बिन चांदनी कैसी,
सूरज बिन धूप न होती।

बिन राधा के कहाँ है पूरा,
नटनागर का नाम।

बोलो राधे............

साथ है जैसे जल की धारा,
साथ है जैसे नदी किनारा।
साथ है जैसे नील गगन के
सूरज चंदा तारा-तारा।
वैसे इनके बिना अधूरा,
मन वृंदावन धाम

बोलो राधे............

श्री राधा को जिसने भुलाया,
उसने अपना जनम गवाँया।
धन्य हुई वाणी वो जिसने,
राधेश्याम नाम है गाया।
उनका सुमिरन करे बिना,
कब मिलता है विश्राम।

बोलो राधे............
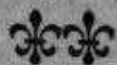
सूरदास जी का इकतारा

गीतकार–सरस्वती कुमार 'दीपक'

सूरदास जी का इकतारा,
मीरा की करताल।
बोले जै गिरधर गोपाल,
बोले जै गिरधर गोपाल।
हाथ छुड़ाए जात हो, निबल जान के मोए,
हृदय से जब जाओ तो, सबल मैं जानूँ तोए।
हाथ छुड़ाकर चले कन्हैया,
फिर भी साथ न छोड़ा।
दर्शन की प्यासी अँखियों ने,
हरि से नाता जोड़ा।
छोड़ी ममता, छोड़ी माया, छोड़ा जग जंजाल।

बोले जै गिरधर..........

गिरधर नागर की भक्ति का,
पाया ऐसा हीरा।
राणा जी का विष का प्याला,
हँस कर पी गई मीरा।
मीरा गिरधर आगे नाची पहन भक्ति वरमाल

बोले जै गिरधर..........

सूरदास के इकतारे ने,
छेड़ी ऐसी गाथा।

जिसको सुनकर झुका लिया,
त्रिभुवन ने अपना माथा।
गज की सुनी पुकार दौड़कर आए थे नंदलाल
बोले जै गिरधर.........

ठुमक चलत रामचंद्र

भजन–तुलसीदास

ठुमक चलत रामचंद्र बाजत पैजनियाँ,
किल्ल किलात उठत लात, गिरत भूमि लटपटाए,
धाय माया गोद लेत, दशरथ की रानियाँ।
ठुमक चलत रामचंद्र.......

विद्रुम से अरुण अधर, बोलत मृद वचन मधुर,
सुंदर नासिका बीच, लटकत लटकनियाँ।
ठुमक चलत रामचंद्र.......

मेवा मोदक रसाल, मन भावे सो ले वो लाल,
और ले हो रुचिर पान, कंचन झुनझुनियाँ।
ठुमक चलत रामचंद्र.......

'तुलसीदास' अति आनंद निरखि के मुखारविंद,
रघुवर की छवि समान, रघुवर मुख बनियाँ।
ठुमक चलत रामचंद्र.......

राम रमैया गाए जा

राम नाम रटते रहो जब तक घट में प्राण।
कभी तो दीनदयाल के भनक पड़ेगी कान॥
राम रमैया गाए जा, राम से लगन लगाए जा।
राम ही तारे राम उबारे राम नाम दोहराए जा॥

सुबह यहाँ तो शाम वहाँ है-2
राम बिना आराम कहाँ है-2
राम रमैया गाए जा, जीवन के सुख पाए जा-2
राम ही तारे राम उबारे.........

भटकाए जब भूल-भूलइयाँ-2
बीच भँवर जब अटके नैया-2
राम रमैया गाए जा, हर उलझन सुलझाए जा-2
राम ही तारे राम उबारे.........

राम नाम बिन जागा सोया-2
अँधियारे में जीवन खोया-2
राम रमैया गाए जा, मन का दीप जलाए जा-2
राम ही तारे राम उबारे.........
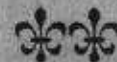
जनम तेरा बातों ही बीत गयो

जनम तेरा बातों ही बीत गयो।
रे तूने! कबहूँ न कृष्ण कहयो॥
पाँच बरस का भोला भाला
अब तो बीस भयो-2
मकर पचीसी माया कारण
देस-बिदेस गयो-पर तूने! कबहूँ.........
तीस बरस की अबमति उपजी
तो लोभ बढ़े नित नयो-2
माया जोड़ी तूने लाख करोड़ी
पर अजहूँ न तृप्त भयो-रे तूने! कबहूँ.........
वृद्ध भयो तब आलस उपजिया
कफ नित कंठ रहयो-2
संगति कबहूँ न कीनी रे तूने
वृथा जनम गयो-रे तूने! कबहूँ.........
ये संसार मतलब का लोभी
झूठा ठाठ रचयो-2
कहत कबीर समझ रे मन मूरख
तू क्यों भूल गयो-रे तूने! कबहूँ.........
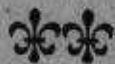
भरत भाई! कपि से उऋण हम नाहीं

भरत भाई! कपि से उऋण हम नाहीं
कपि से उऋण हम नाहीं
सौ योजन मर्यादा समुद्र की ये कूदि गयो क्षण माहीं
लंक जारी सिया सुधि लायो, पर गर्व नहीं मन माहीं

कपि से उऋण हम नाहीं.........

शक्ति बाण लग्या लछिमन के हा हा कार भयो दल माहीं
धौलगिरि कर धर ले आयो, भोर न होने पाई

कपि से उऋण हम नाहीं.........

अहिरावण की भुजा उखाड़ी, पैठि गयो मठ माहीं
जो भैया! हनुमत नहीं होते, मोहे को लातो जगमाहीं

कपि से उऋण हम नाहीं.........

आज्ञा भंग कबहूँ नहिं कीनी, जहाँ पठायो तहाँ जाई
'तुलसीदास' पवनसुत महिमा, प्रभु निज मुख करत बड़ाई

कपि से उऋण हम नाहीं.........
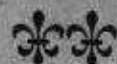
गज़ल

भारत में फिर से आजा, गिरवर उठाने वाले।
सोतों को फिर जगाजा, गीता के गाने वाले॥
गूँजा था जिससे मधुवन, नाचा था जिससे त्रिभुवन।
वो तान फिर सुनाजा, बंशी बजाने वाले॥
दुःख दर्द बढ़ रहे हैं, दुष्काल पड़ रहे हैं।
फिर कष्ट सब मिटा जा, गौवें चराने वाले॥
है 'राधेश्याम' निर्बल, जन तेरे भक्त वत्सल।
बिगड़ी को फिर बनाजा, बिगड़ी बनाने वाले॥

पुष्पांजलि

तू दयाल दीन हौं तू दानी हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप पुँजहारी॥
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोसों।
मो समान आरति नहिं आरति हरि तोसों॥
ब्रह्म तू हौं जीव तू ठाकुर हौं चेरो।
तात मात गुरु सखा, तू सबहि हित मेरो॥
तोहि मोहि नाते अनेक मानिए जो भावे।
त्यों-त्यों तुलसी कृपाल शरण पावे॥
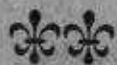
प्रसाद अर्पण करना

मेरा मुझको कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर।
तेरा मुझको सोहता, क्या लागे है मोर॥
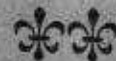
पद

इस तन में रमा करना इस मन में रहा करना।
बैकुण्ठ यहीं तो है, इसमें ही बसा करना॥
हम मोर बन के मोहन नाचा करेंगे बन में।
तुम श्याम घटा बनकर उस बन में उठा करना॥
हो करके हम पपीहा, पी पी रटा करेंगे।
तुम स्वाति बूँद बन कर प्यासे पै दया करना॥
हम 'राधेश्याम' जग में तुम को ही निहारेंगे।
तुम दिव्य ज्योति बनकर, नयनों में रहा करना॥
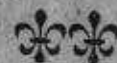
मंगलाचरण

जय रघुपति, जय ब्रजपति जय जगदीश्वरम्।
जय राघव, जय माधव, जय केशव करुणाकरम्॥
विश्वम्भरं सर्वोपरं, नटनागरं गुण आगरम्।
सुखकारणं दुःखटारणं, धनुषधरं, त्रिरवर धरं॥ जय०

सुखधाम सदा अभिराम हरे, सीतापति सीताराम हरे।
निसिवासर तुम्हें नमामि हरे, प्रणमामि हरे प्रणमामि हरे॥
श्रीकृष्ण कन्हैया श्याम हरे, राधेपति राधेश्याम हरे॥

प्रार्थना

प्रभु तुम गौ ब्राह्मण प्रतिपाल॥
तुम रघुनन्दन देवकीनन्दन, तुम जग के रखवाल।
तुमरी माया पार न पाया, अब सुध लो गोपाल।
प्रभु.....
दुर्दिन घटा देश पर भारी, गौ ब्राह्मण का काल।
दानव दैत्य असुर बहु बाढे, हिंसक ना चाण्डाल।
प्रभु.....
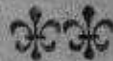
हरि कीर्तन

जय गणेश जय गणेश जय गणेश पाहि माम्।
श्री गणेश श्री गणेश श्री गणेश रक्ष माम्॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
जय रघुनन्दन जय सियाराम जानकीवल्लभ सीताराम।

जय यदुनन्दन जय घनश्याम रुक्मणि वल्लभ राधेश्याम॥
रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीता राम।
जय गोविन्द जय गोपाल केशव माधव दीनदयाल॥
श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव।
गोविन्द जय जय गोपाल जय जय।
राधारमण हरि गोविन्द जय जय॥
सीताराम सीताराम सीताराम बोल।
राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम बोल॥
नाम प्रभु का है सुखकारी, पाप कटेंगे छिन में भारी।
पाप की गठरी दे तू खोल॥ सीता०
प्रभु का नाम अहिल्या तारी, भक्त भीलनी हो गई प्यारी।
नाम की महिमा है अनमोल॥ सीता०
रामभजन बिनमुक्ति न होवे, मोतीसा जन्मव्यर्थ न खोवे॥
राम रसामृत पीले घोल॥ सीता०
सुवा पढ़ावत गणिका तारी, बड़े बड़े निश्चर संहारी।
गिन-२ पापी तारे तोल॥ सीता०
जो-२ शरण पड़े प्रभु तारे, भवसागर से पार उतारे।
बन्दे लगता तेरा क्या मोल॥ सीता०
चक्रधारी भजहर गोविन्दम्, मुक्तिदायक परमानंन्दम्।
हरदम कृष्ण तराजू तोल॥ सीता०
हरि के प्रेमी हर २ बोलो आओ प्यारे मिलकर गाओ,
हरिचरण में ध्यान लगाओ सुख में दुख में हरि २ बोलो।
अभिमान त्यागो सेवाकरो नारायण नारायण नारायण

सुना जा कृष्ण

सुनाजा २ सुनाजा कृष्णा
तू गीता वाला ज्ञान सुनाजा कृष्णा।
पिलादे २ पिलादे कृष्णा
ओ प्रेम भर प्याला पिलादे कृष्णा।
दिखाजा २ दिखाजा कृष्णा
वो माधुरी सी मूर्ति दिखाजा कृष्णा।
लगाजा २ लगाजा कृष्णा
मेरी नैया को पार लगाजा कृष्णा।
खिलाजा २ खिलाजा कृष्णा
माखन व मिश्री खिलाजा कृष्णा।
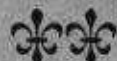
श्री कीर्तन

सात्विकता अपनाओ प्यारे ! सात्विकता अपनाओ जी
'ईश' भजन में ध्यान लगाकर, सुख और शांति बढ़ाओ जी
ब्रह्मचर्य का पालन करके, बल अरु बुद्धि बढ़ाओ जी
जीवन में सत् पथ पर चलकर ही निर्भय हो जाओ जी
पालन करते हुए प्रकृति का तेजस्वी बन जाओ जी
वही पुरानी वैदिक विद्या अपना धर्म दिखाओ जी
राग द्वेष का कर विनाश सब से ही प्रेम बढ़ाओ जी

सच्चा सेवी बन कर मन में सुन्दर भाव सजाओ जी
धेनु वंश के रक्षक बनकर जगहित शक्ति बढ़ाओ जी
'मनसुख' सब आपस में हिलमिल हरि के गान सुनाओ जी
सात्विक भोजन खाकर ही तुम धन बल आयु बढ़ाओ जी
प्रातःकाल नित्य मौन रख प्रभु से ध्यान लगाओ जी

भजन प्रभु भक्ति

बंदे ले प्रभु का नाम ईश्वर के गुण गाया कर,
मन के मैले मंदिर में झाड़ू रोज़ लगाया कर। 1।
सोने में तो रात गंवाई दिन भर करता काम रहा,
इसी तरह बरबाद तू बंदे करता अपना आप रहा,
प्रातःकाल उठ प्रेम से सत्संगति में जाया कर। 2।
दुखिया पास पड़ा है तेरे तूने मौज उड़ाई तो क्या,
भूखा-प्यासा पड़ा पड़ोसी तूने रोटी खाई तो क्या,
सब से पहले पूछकर भोजन को तू खाया कर। 3।
नर तन के चोले का पाना बच्चों का कोई खेल नहीं,
जन्म-जन्म के शुभ कर्मों का होता जब तक मेल नहीं,
नर तन पाने के लिए उत्तम कर्म कमाया कर। 4।
देखो दया जगदीश्वर की वेदों का जिन ज्ञान दिया,
सोच समझ ले अपने मन में कितना है कल्याण किया,
सब कर्मों को छोड़कर प्रभु को ही तू ध्याया कर। 5।

श्री राम कृष्ण कीर्तन

जय जय श्री राघव राम, जय जय श्री माधव श्याम।
अवध निवासी सीताराम, मथुरा वासी राधेश्याम।
जय दुःख भंजन सीताराम, असुर निकंदन राधेश्याम।
धनुष धारी सीताराम, मुरली धारी राधेश्याम।
भव भय भंजन सीताराम, जन मन रंजन राधेश्याम।
जय रघुनंदन सीताराम, जय यदुनंदन राधेश्याम।
जय सुखकारी सीताराम, जय दुःख हारी राधेश्याम।
दशरथ नंदन राघव राम, नंद के नंदन राधेश्याम।
कौशल्या के प्यारे राम, यशोदा के नैन के तारे राधेश्याम।
तुलसी भाए सीताराम, सूर लुभाए राधेश्याम।
जय दुःख नाशक सीताराम, प्रेम प्रकाशक राधेश्याम।
अधम अधारण सीताराम, कलिमद मारन राधेश्याम।
रघुपति राघव राजाराम, यदुपति यादव मोहनश्याम।
जयति खरारी राघव राम, जयति मुरारी राधेश्याम।
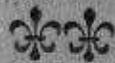
ईश वंदना

मात तू ही गुरु तात तू ही, मित्र भ्रात तु ही धनधान्य भंडारो
ईश तू ही जगदीश तू ही, ममशीश तू ही प्रभु राखन हारो

राव तू ही उमराव तू ही, सत भाव तु ही मम नैन के तारो
सार तू ही करतार तू ही, घर-बार तू ही परिवार हमारो। १
शरणागत प्रतिपाल प्रभो हमको एक आस तुम्हारी है
तुम्हरे बिन दूसर औरकोऊ नहीं दीनन को हितकारी है
सुधिं लेत सदा सब जीवन का अति ही करुणा बिसतारी है
प्रतिपाल करें बिन ही बदले अस कौन पिता महतारी है। २
जब नाथ दया करी देखा हो छूटी जात बिथा संसारी है
बिसराय तुम्हें सुख चाहत जो असकीन निदान अनारी है
धनी है धनी है सुखदायक जो, तब प्रेम सुधा अधिकारी है
सब भाँति समर्थ सहायक हो तब आश्रित बुद्धि हमारी है
'परताप नारायण' तो तुम्हरे, पद पंकज पै बलिहारी है। ३
परवाह ही तिन्हें नहीं स्वर्गहू की जिनको तन कीर्ति प्यारी है
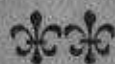
राम कीर्तन

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम।
ईश्वर अल्लाह तेरो नाम सबको सनमति दे भगवान॥ रघु०
जय रघुनन्दन जय सिया राम जानकी वल्लभ सीताराम।
कपिपति लंकापति अभिराम, जस मारुतसुत पूरण काम॥
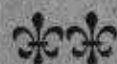
श्री राम प्रार्थना

चौपाई

अब प्रभु कृपा करहुँ रघुराई,
सब तजि भजन करौं मनलाई।
असरन सरन दीन हितकारी,
मोहिंजान तजहुँ भक्त जपहारी।
मोरे प्रभु तुम गुरु पितु माता,
आऊँ कहाँ तजिपद जल पाता।
बालक अबुध ज्ञान बलहीना,
रखहु सरन जानि जन दीन्हा।
हर रघुनन्दन प्रान पिरीते,
तुम बिन जियत बहुत दिन बीते।
प्राणनाथ तुम बिनु जग माहीं,
मोकहं सुखद कतहुं कोउ नाहीं।
संकट विकट हरहु रघुराया,
ममहिय बसहु करहु प्रभुदाया।
दीन दयाल बिरद संभारी,
हरहु नाथ मम संकट भारी।
चरण कमल प्रभु ध्यान लगाऊँ,
हाथ जोड़ तव पद सिर नाऊं।
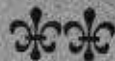
भजन प्रार्थना

मेरा तो इस जहान में ईश्वर ही मददगार है,
दिल में उसकी आरजू उससे ही मेरा प्यार है।
सृष्टि का कर्ता है वही, दुःखों का हर्ता है वही,
जो कुछ भी देख पाते हैं सबका वही उद्धार है।
पाप पाखंड छोड़े जो, विषयों से मुख मोड़े जो
ईश्वर से नाता जोड़े जो उसी का बेड़ा पार है।
ढूँढा इधर-उधर बहुत, कहीं भी प्यार न मिला,
दिल मे टटोला जब उसे हो गया दीदार है।
वेदों को जो न पढ़ते हैं, सन्ध्या कभी न करते हैं
उनके लिए जहान में चैन है न करार है।
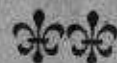
प्रातः प्रार्थना (१)

हे दयामय हम सबों को शुद्धताई दीजिए।
दूर करके हर बुराई को भलाई दीजिए॥
ऐसी कृपा और अनुग्रह हम पर हो परमात्मा।
हो हमारे देश वासी सब के सब धर्मात्मा॥
हो उजाला सबके मन में ज्ञान के प्रकाश से।
और अंधेरा दूर सारा हो अविद्या नाश से॥
खोटे कर्मों से बचें और तेरे गुण गावें सभी।

शुभ कर्म में होवें तत्पर दुष्टगण भागें सभी॥
सारी विद्याओं को सीखें ज्ञान से भरपूर हों।
अच्छे कर्मों को करें और दुष्टजन सब दूर हों॥
यज्ञ हवन से हो सुगन्धित अपना भारतवर्ष देश।
वायु-जल सुखदाई होवें जावें मिट सारे क्लेश॥
वेद के प्रचार में होवें सभी पुरुषार्थी।
लोभी और कामी क्रोधी कोई भी हममें नहीं॥
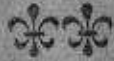
प्रातः प्रार्थना (२)

हे प्रभो आनन्ददाता ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हम से कीजिए॥
लीजिए हमको शरण में हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी धर्म रक्षक वीर व्रत धारी बनें॥
गत हमारी आयु हो प्रभु लोक के उपकार में।
हाथ डालें हम कभी क्यों भूल कर अपकार में॥
मातृ-भूमि मातृ-सेवा हो अधिक प्यारी हमें।
देश में पदवी मिले निज देश हितकारी बनें॥
कीजिए हम पर कृपा ऐसी अहो परमात्मा।
मोह मद मत्सर रहित होवे हमारी आत्मा॥
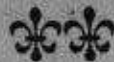
प्रातः प्रार्थना (३)

हम बालकों की ओर भी प्रभु तेरा ध्यान हो।
हो दूर सारी मूर्खता कल्याणकारी ज्ञान हो॥
हम ब्रह्मचारी वीर व्रतधारी सदाचारी बने।
हमको हमारे देश भारत पर सदा अभिमान हो॥
होकर बड़े कुछ कर दिखाने के लिए तैयार हों।
दिल में हमारे देश सेवा का बड़ा अरमान हो॥
हो नौजवानों की कभी जब माँग प्यारे देश को।
तब मातृ वेदी पर प्रथम हमारा माथ हो॥
संसार का सिरमौर होकर देश हमको कह सके।
हे वीर बालक धन्य तुम मेरी असल संतान हो॥
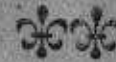
प्रातः प्रार्थना (४)

वह शक्ति हमें दो दयानिधे,
कर्त्तव्य मार्ग पर डट जाएँ।
पर - सेवा पर - उपकार में हम,
निज जीवन सफल बना जाएँ॥
महावीर, कृष्ण, बुद्ध, राम, गोविंद,
के पद चिन्हों पर चल-चल कर।

हो-होकर देश धर्म पर बलि,
दुनियाँ को कुछ दिखला जाएँ॥
पृथ्वी, प्रताप शिवाजी बन,
हम देश से अपने प्रेम करें।
नेता जी सम जग नेता बन,
शुचि प्रेमसुधा नित बरसाएँ॥
विद्वान बनें बलवान बनें,
गुणवान बनें धनवान बनें।
हम गाँधी, तिलक, जवाहर बन,
सन्मार्ग विश्व को दिखलाएँ॥
खण्डित अशक्त पीड़ित भारत,
सर्वस्व लुटा स्वाधीन हुआ।
इसकी अखण्डता रक्षा हित,
तन-मन-धन अर्पण कर जाएँ॥
निज आन मान मर्यादा का,
प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे।
जिस देश जाति में जन्म लिया,
बलिदान उसी पर हो जाएँ॥

सदाचार

उठो ऐ भाई अब लंका की बस हस्ती के दो दिन हैं।
लश्कर तो चल बसा अब बस्ती के दो दिन हैं॥
पूरी नींद होने पर ही हम तुम को जगाते थे।
और तेरे खाने का सामान सब हम साथ लाते थे॥
मगर अब जागने वाले भी खुद सोने वाले हैं।
हम अपनी ज़िन्दगी से हाथ अब धोने वाले हैं॥
ज़ेवर और धन का तो दिल उसका भूखा ही नहीं।
लंका भी सारी रख दी उसने तो थूका भी नहीं॥
एक बात उसके मुँह में सदा रहती है।
जिस वक्त जाओ फकत राम-राम कहती है॥

गुरुजी का उपदेश

सत संगत में बैठना यही सुख का मूल।
बेटा कभी न जाना कुसंगत में भूल॥
सत संगत की गंग में निस दिन करो स्नान।
मन निर्मल हो जात है बढ़े ज्ञान सम्मान॥
धर्म, ज्ञान, साथ नम्रता अरु भक्ति भगवान।
परहित, सेवा, शिक्षा मिले सुसंगत जान॥
आलस, कपट, क्रोध जो तज झूठा अभिमान।
निंदा, घृणा नाश कर सौ संगत शुभ जान॥

सेवा करे जो बड़ों की सुशील नम्रता धार।
यश, बल, आयु, विद्या बढ़ते उसके चार॥
परनारी, माता-जननी, परधन माटी जान।
अपने आत्मा वांग सुत वाणी जीव तमाम॥
तेज़ धार कर न्याय से दुष्ट दण्ड से मार।
अन्याय ना को कर सके शक्ति लो धार॥
कर्मज्ञान अष्टांग योग और साधन मिल चार।
ईश्वर के गुण सेवने यह भक्ति का सार॥
श्रद्धा, भक्ति, प्रेम, तप, वैरागी, अभ्यास।
दया धर्म अरु ज्ञान से मिले ईश विश्वास
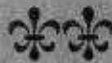
क्रोध

क्रोध करे हृदय जले, रक्त जले और माँस।
क्रोध नर यूँ देखिए, ज्यूँ बन सूखा बाँस॥
क्रोध भयंकर रोग है, सन्नीपात यह जान।
क्रोध युक्त नर हो जो भी, भूले सब पहचान॥
क्रोध भरे नर राक्षसी, करते कार व्यवहार।
क्रोध की छाया जहाँ, वहीं है हा हाकार॥
क्रोध किए रावण मरा, दुर्योधन का नाश।
राज गए दुर्गत भई, मिला नरक का वास॥

क्रोध भरे जब भड़क उठे नेत्र लाल हो ज्वाल।
रंग रूप सब नष्ट हो, सुंदर मुख विकराल॥
क्रोध ज्वाल से क्षीण हो, सुंदर स्वास्थ महान।
स्वास्थ नष्ट यौवन घटे, और घटे सब ज्ञान॥
स्वास्थ्य प्रिय तज क्रोध को, सुंदर शील को पावे।
धनी, यशस्वी, रूपमयी, जग में माना जावे॥

गज़ल

है बहारे बाग दुनियाँ चंद रोज़,
देख लो इसका तमाशा चंद रोज़॥
ऐ मुसाफिर! कूच का सामान कर,
इस जहाँ में है बसेरा चंद रोज़॥
पूछा लुकमान से, जिया तू कितने रोज़,
दस्ते हसरत मलके बोला चंद रोज़॥
बाद कफ़न कब्र में बोली कज़ा,
अब यहाँ सोते रहना चंद रोज़॥
फिर तुम कहाँ और मैं कहाँ ए दोस्तो,
साथ है मेरा तुम्हारा चंद रोज़॥
क्यों सताते हो दिले बेजुर्म को,
जालिमों, है ये ज़माना चंद रोज़॥
याद कर तू ऐ नज़ीर कबरों के राज़,
ज़िंदगी का है भरोसा चंद रोज़॥

भजन प्रार्थना

माँ तेरी पावन पूजा में, मैं केवल इतना कर पाऊँ।
युग-युग से चरणों में तेरे,
चढ़ते आए पुष्प घने।
मैंने उनसे सीखा केवल,
अपना पुष्प चढ़ा पाऊँ॥ माँ तेरी०
चित्तौड़ दुर्ग के वह कण-कण,
जय बोल रहे तेरी क्षण-क्षण।
माँ मैं भी अपने टूटे स्वरों को,
उनके साथ मिला पाऊँ॥ माँ तेरी०
कुछ कली चढ़ी, कुछ पुष्प चढ़े,
कुछ समय से पहले फिसल पड़े।
माँ मुझको दो वरदान यही,
मैं समय पर कहीं फिसल न जाऊँ॥ माँ तेरी०
कुछ चढ़े-चढ़े कुछ स्वर्ग खड़े,
कुछ चढ़ने को तैयार खड़े।
माँ मैं भी इतनी तैयारी कर,
उनके साथ मिला पाऊँ॥ माँ तेरी०

ईश्वर प्रार्थना

भवानी शंकरौ वंदे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ!
याभ्याँ बिन न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तस्थमीश्वरम्!!
मंगल भवन अमंगल हारी,
द्रवहु सो दशरथ अजिर बिहारी।
सियाराम मय सब जग जानी,
करहूँ प्रणाम जोरि जुगपानी।
हरि व्यापक सर्वत्र समाना,
प्रेम में प्रकट होंहिं मैं जाना।
दूहि तन करफल विषयन भाई,
स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाई।
निज अनुभव अब कहऊँ खगेशा,
बिन हरि भजन न जाहिं कलेशा।
उमा कहऊँ मैं अनुभव अपना,
सत हरि भजन जगत सब सपना।
नर तन पाय विषय मन देही,
पलटि सुधा ते सठ विषलेहीं।
पुत्रवती युवती जग सोई,
रघुबर भक्त जासु सुत होई।

मम गुण गावत पुलक शरीरा,
गद् गद बैन नयन बहे नीरा।
जहाँ सुमति तहाँ संपत्ति नाना,
जहाँ कुमति तह विपति निदाना।
नाथ भक्ति तव सब सुखदायिनी,
देहु कृपा करिसो अनपायिनी।
राम कृपा जापर अनुकूला,
ताहि न व्यापि त्रिविध भवसूला।
मोरे तुम प्रभु गुरु पितु माता,
जाऊँ कहाँ तजिपद नस जाता।
जो करनी समझें प्रभु मोरी,
नहिं निस्तार कल्प सतकोई।
असरन सरन विरुद संभारी,
मोहीजनि तजहुँ भगत हितकारी।
कलयुग केवल नाम अधारा,
सुमिरि-सुमिरि नर उतरहु पारा।
अब प्रभु कृपा करहु एहि भांति,
सब तजि भजन करऊँ दिन राती।
श्री राम जय राम जय जय राम,
श्री राम जय राम जय जय राम।
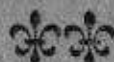
भक्तों की प्रार्थना

इतना तो करना स्वामी, जब प्राण तन से निकले।
गोविंद नाम कह कर यह प्राण तन से निकले। टेक०
श्री गंगाजी का तट हो, या जमुना वंशी का तट हो।
मेरा साँवरा निकट हो, फिर प्राण तन से निकले। 1
श्री वृंदावन का थल हो, मेरे मुख में तुलसीदल हो।
विष्णु चरण का जल हो, फिर प्राण तन से निकले। 2
मेरा साँवरा खड़ा हो, बंशी का स्वर भरा हो।
तिरछा चरण धरा हो, फिर प्राण तन से निकले। 3
सिर सोहना मुकुट हो, मुखड़े पर काली लट हो।
यदि ध्यान मेरे घट हो, जब प्राण तन से निकले। 4
केसर तिलक हो आला, मुखचन्द्र सा उजाला।
डालूँ गले में माला, जब प्राण तन से निकले। 5
कानों जड़ाऊँ बाली, लट की लटें हों काली।
देखूँ अदा निराली, जब प्राण तन से निकले। 6
पचरंग काछनी हो, पट पीत से तनी हो।
मेरी बात सब बनी हो, जब प्राण तन से निकले। 7
पीताम्बरी कसी हो, होठों में कुछ हँसी हो।
छवि ये ही दिल बसी हो, जब प्राण तन से निकले। 8
सुध मुझको ना हो तन की, तैयारी हो गमन की।
लकड़ी होवे बृजवन की, जब प्राण तन से निकले। 9

उस वक्त जल्दी आना, मुझको न भूल जाना।
नूपुर की धुन सुनाना, जब प्राण तन से निकले। 10
जब कण्ठ प्राण आवें, कोई रोग न सतावे।
यम दर्श न दिखावे, जब प्राण तन से निकले। 11
यह नेक सी अरज है, मानो तो क्या हरज है।
यही दास की गरज है, जब प्राण तन से निकले। 12
इतना तो करना स्वामी, जब प्राण तन से निकले।
गोविंद नाम कह कर मेरे प्राण तन से निकले। 13

शिवजी के त्याग की बारहखड़ी

धन 2 भोलानाथ तुम्हारे कौड़ी नहीं खजाने में।
तीन लोक बस्ती में बसाए, आप बसे वीराने में।
जटाजूट का मुकुट शीश पर गले में मुँडों की माला।
माथे पर फूटा सा चन्द्रमा कपाल का कर में प्याला।
जिसे देखकर भय व्यापे सो गले बीच लिपटा काला।
और तीसरे नेत्र में तुम्हारे महाप्रलय की है ज्वाला।
पीने को हर वक्त भंग और आक धतूरा खाने में। तीन०
चर्म शेर का वस्त्र पुराना बुढ़ा बैल सवारी को।
तिसपर तुम्हारी सेवा करती धन 2 गौरी बिचारी को।
वह तो राजा की बेटी ब्याही गई भिखारी को।
क्या जाने क्या देखा उसने नाथ तेरी सरदारी को।

सुनी तुम्हारे ब्याह की लीला भिखमंगो के गाने में। तीन०
नाम तुम्हारे अनेक हैं पर सबसे उत्तम है नंगा।
याही ते शोभा पाई जो विराजती शिर पर गंगा।
भूत प्रेत बैताल साथ मैं यह लश्कर है सब चंगा।
तीन लोक के दाता होकर आप बने क्यों भिखमंगा।
अलख मुझे बतलाओ मिले क्या तुमको अलख जगाने में।
यह तो सगुण का स्वरूप है निर्गुण में निर्गुण हो आप।
पल में प्रलय करो छिन में रचना तुम्हें नहीं कुछ पुण्य-पाप।
किसी का सुमिरनध्यानन तुमको अपना ही करते हो जाप।
अपने बीच में आप समाए आप ही आप रहे हो व्याप।
हुआ मेरा मनमगन यह सिठनी ऐसी नाथ बनाने में। तीन०
कुबेर को धन दिया और तुमने दिया इन्द्र को इन्द्रासन।
अपने तन पर खाक रमाई नागों के पहने भूषण।
मुक्ति की भुक्ति दाता हो मुक्ति भी तुम्हारे गहेचरण।
देवीसिंह कहे दास तुम्हारा हितचित नितकरे भजन।
बनारसी को सब कुछ बख्शा अपनी जबाँ हिलाने में। तीन०

शिवजी का बाँटना बारहखड़ी

धन-2 भोलानाथ बाँट दिए तीन लोक इकपल भर में।
ऐसे दीनदयाल हो दाता कौड़ी नहीं रखी घर में।
प्रथम दिया ब्रह्मा को वेद वो बना वेद का अधिकारी।

विष्णु को दे दिया चक्र सुदर्शन लक्ष्मी सी सुन्दर नारी।
इन्द्र को दे दी कामधेनु और ऐरावत सा बलकारी।
कुबेर को सारी वसुधा का कर दिया तुमने भण्डारी।
अपने पास पात्र नहीं रक्खा रक्खा तो खप्पर कर में।
अमृत तो देवतों को दिया और आप हलाहल पान किया।
ब्रह्मज्ञान दे दिया उसे जिसने कुछ तुम्हारा ध्यान किया।
भागीरथ को गंगा दे दी सब जग ने स्नान किया।
बड़े-2 पापियों का तुमने एक पल में कल्याण किया।
आप नशे में चूर रहो और पियो भाँगनित खप्पर में ऐसे
रावण को लंका दे दी और बीस भुजा दस शीश दिए।
रामचन्द्र को धनुष बाण वो तुम्हीं ने जगदीश दिए।
मनमोहन को मोहनी दे दी और मुकुट तुम ईश दिए।
मुक्ति हेतु काशी में वास भक्तों को विश्वा बीस दिए।
अपने तन पर वस्त्र न रखो मगन रहो बाघम्बर में। ऐसे
नारद को दई बीन और गंधरवों को राग दिया।
ब्राह्मण को दिया कर्मकांड और संन्यासी को त्याग दिया।
जिस पर तुम्हारी कृपा हुई उसको तुमने अनुराग दिया।
देवीसिंह कहे बनारसी को सबसे उत्तम भाग दिया।
जिसने पाया उसी ने दिया महादेव तुम्हरे वर में। ऐसे०
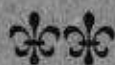
संकीर्तन ध्वनि

1- गोपाल कृष्ण, राधेकृष्ण। कृष्णमुरारी, गिरधारी। आजा बंशी बजाने वाले, आजा गौवें चराने वाले। द्रोपदी चीर बढ़ाने वाले, बेड़ा पार लगने वाले।

गीता ज्ञान बताने वाले।

2- राधे कृष्ण हरे मुरारे, आओ प्यारे भगतो आवो। कृष्ण नाम पर बलि-2 जावो, एक श्वास सब मिलकर गावो।
'मुख से बोलो नंददुलारे, एक बार सब मिलकर गावो। मुख से बोलो बंसुरी वाले।'

3- श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव।

4- हरि-2 बोल, बोल हरि बोल, मुकुंद माधव गोविन्द बोल।

5- श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानन्द, हरे कृष्ण हरे राम राधे गोविन्द।

6- राधामोहन कुंजबिहारी, मुरलीधर गोवर्धनधारी।

7- श्रीराम हरे श्रीराम हरे, श्रीराम हरे सुखधाम हरे। श्रीराम हरे छविधाम हरे, मनमोहन सुन्दर श्याम हरे

घनश्याम हरे घनश्याम हरे।

8- राधे श्याम राधे श्याम, राधे श्याम राधे राधे।
9- गोविंद जय-2, गोपाल जय-2 राधा रमण हरि गोविंद जय 2।
10- श्रीमन्नारायण नारायण भजनमन नारायण नारायण
11- श्रीकृष्ण गोविंद माधव मुरारी रामनाथ राधारमण दुखहारी।
12- जय मीरा के गिरधर नागर, सूरदास के श्याम,
13- हरे मुरारे मधुकैटभारे, गोपाल गोविंदमुकुन्दशौरे भुवने नारायणकृष्ण विष्णो निराकार त्वं जगदीश रक्षक।
14- जय यदुनन्दन जय घनश्याम रुक्मिणी वल्लभ राधेश्याम।
15- रघुनन्दन जय सियाराम जानकी वल्लभ सीताराम
16- रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीताराम

स्तुति दश अवतार

नारायण जय ब्रह्म परायण श्रीपति कमला कान्तम्।
नाम अनन्त कहाँ लग वरणों शेष न पावत अन्तम्।
नारद शारद शिव सनकादिक ब्रह्मा ध्यान धरन्तम्।
मच्छ-कच्छ शूकर नर हर प्रभु वाहन रूप धरन्तम्।
परशुराम श्री रामचन्द्र जन लीला कोट करन्तम्।

जन्म लियो वसुदेव के गृह नाम धरयो नंद नन्दनम्।
जमुना में कूद कालिया नाथो फणपर निरत करन्तम्।
बलदाऊ संग असुर संहारे कंस के केश गहन्तम्।
जगन्नाथ जगपति चिंतामणि हुई बैठे स्वच्छन्दम्।
कलियुग अन्त अनन्त होकर कल्की रूप धरन्तम्।
दश अवतार हरजू के गाए सुर शरण भगवन्तम्।

भक्ति पद

इस तन में रहा करना इस मन में रहा करना।
बैकुण्ठ यही तो है, इसमें ही बसा करना।
हम मोर वन के मोहन नाचा करेंगे वन में।
तुम श्याम घटा बनकर उस वन में उठा करना।
हो करके हम पपीहा, पी पी रटा करेंगे।
तुम स्वाति बूँद बन कर प्यासे पै दया करना।
हम 'राधेश्याम' जग में तुम को ही निहारेंगे।
तुम दिव्यज्योति बनकर, नयनों में रहा करना।

शक्ति पाठ प्रारम्भ

ध्यान- पवन तनय संकट हरण, मंगल मूरति रूप।
राम-लषन-सीता सहित, हृदय बसहु सुरभूप।
प्रार्थना- बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरों पवन कुमार।

बलबुद्धि विद्या देहु मोहि हरहु क्लेश विकार।

शक्ति पाठ करने के नियम

1. एकांत में व जोर से बोल कर सामूहिक तथा कीर्तन के साथ।
2. जिस कार्य के लिए जो चौपाई है, पाठ उस चौपाई का सम्पुट देकर करना चाहिए।

पाठ साधारण

रक्षा के लिए

मामभिरक्षक रघुकुल नायक।
घृत वर चाप रुचिर कर सायक।

विपत्ति दूर करने के लिए

राजिव नयन धरे धनु सायक।
भक्त विपत्ति भंजन सुखदायक।

सहायता के लिए

मोरे हित हरि सम नहि कोऊ।
एहि अवसर सहाय सोई होऊ।

सब काम बनाने के लिए

बंदौं बाल रूप सोई रामू।
सब सिधि सुलभ जपत जेहि नामू।

वश में करने के लिए

सुमिर पवन सुत पावन नामू
अपने वश कर राखे रामू।

कुसंकट से बचने के लिए

दीनदयालु विरद संभारी।
हरहु नाथ मम संकट भारी।

विघ्न विनाश के लिए

सकल विघ्न व्यापहिं नहिं तेही।
राम सुकृपा बिलोकहिं जेही।

रोग विनाश के लिए

राम कृपा नाशहिं सब रोगा।
जो यहि भाँति बनहिं संयोगा।

ज्वर ताप दूर करने के लिए

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज्य नहिं काहुहि व्यापा।

दुःख नाश के लिए

राम भक्ति मणि उर बस जाके।
दुःख लवलेस न सपनेहु ताके।

खोई चीज़ पाने के लिए

गई बहोरि गरीब नेवाजू।
सरल सबल साहिब रघुराजू।

अनुराग बढ़ाने के लिए

सीता राम चरण रत मोरे।
अनुदिन बढ़े अनुग्रह तोरे।

सब सुख लाने के लिए

जै सकाम नर सुनहिं जे गावहिं।
सुख सम्पत्ति नाना विधि पावहिं।

सुधार करने के लिए

मोहि सुधारहि सोई सब भाँती।
जासु कृपा नहिं कृपा अघाती।

विद्या पाने के लिए

गुरु गृह पढ़न गए रघुराई।
अल्प काल विद्या सब आई।

सरस्वती निवास के लिए

जेहि पर कृपा करहिं जन जानी।
कवि उर अजिर नचावहिं बानी।

निर्मल बुद्धि के लिए

ताके युग पदं कमल मनाऊँ।
जासु कृपा निर्मल मति पाऊँ।

मोह नाश के लिए

होय विवेक मोह भ्रम भागा।
तब रघुनाथ चरण अनुरागा।

प्रेम बढ़ाने के लिए

सब नर करहिं परस्पर प्रीती।
चलत स्वधर्म कीरत श्रुति रीती।

प्रीति बढ़ाने के लिए

बैर न कर काहू सन कोई।
जासन बैर प्रीति कर सोई।

सुख प्राप्ति के लिए

अनुजन संयुत भोजन करहीं।
देखि सकल जननी सुख भरहीं।

भाई का प्रेम पाने के लिए

सेवहिं सानुकूल सब भाई।
राम चरण रति अति अधिकाई।

बैर दूर करने के लिए

बैर न कर काहू सन कोई।
राम प्रताप विषमता खोई।

भाई से प्रीति बढ़ाने के लिए

राम करहिं भ्रातन पर प्रीति।
नाना भाँति सिखावहिं नीती।

मेल कराने के लिए

गरल सुधा रिपु करहिं मिलाई।
गोपद सिंधु अनल सितलाई।

शत्रु नाश के लिए

जाके सुमिरन ते रिपु नासा।
नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा।

रोज़गार पाने के लिए

विश्व भरण पोषण करि जोई।
ताकर नाम भरत अस होई।

मोह दूर करने के लिए

जासु कृपा छूटै मद मोहा,
ता कहं उमा किं सपनेहु कोहा।

इच्छा पूरी करने के लिए

राम सदा सेवक रुचि राखी,
वेद पुराण साधु सुर साखी।

पाप विमोचन के लिए

पापिऊ जाकर नाम सुमिरहीं,
अति अपार भवसागर तरहीं।

अल्प मृत्यु न होने के लिए

अल्प मृत्यु नहिं कबनिहूँ पीरा,
सब सुन्दर सब निरुज शरीरा।

दरिद्रता दूर के लिए

नहिं दरिद्र कोऊ दुखी न दीना,
नहिं कोऊ अबुध न लक्षण हीना।

दर्शन पाने के लिए

अतिशय प्रीति देख रघुबीरा,
प्रकटे हृदय हरण भव पीरा।

दर्शन पाने के लिए

भूप रूप तब राम दुराबा,
हृदय चतुर्भज रूप दिखावा।

शोक दूर करने के लिए

नयन वन्त रघुपतहिं बिलोकी,
आए जन्म फल होहिं विशोकी।

विनती भगवान के चरणों में

मोरे तुम प्रभु गुरु पितु माता,
जाऊँ कहाँ तजि पद जल जाता।

भजन भगवान की चरण वन्दना के लिए

अब प्रभु कृपा करहु एहि भाँति,
सब तजि भजन करौं दिन राती।

क्षमा माँगने के लिए

अनुचित बहुत कहहुँ अज्ञाता,
क्षमहुँ क्षमा मन्दिर दोऊ भ्राता।

अर्जी देने के लिए

कहाँ वचन सब आरत हेतु,
रहत न आरत के चित चेतू।

दोहा– सीता अनुज सहित प्रभु, नील जलद तनश्याम,
मन हिय बसहु निरन्तर, सगुण रूप श्री राम।
भगत कल्पतरु प्रनत हित, कृपासिंधु सुख धाम,
सोई निजभगत मोहि प्रभु, देहु दयाकर राम।
कथा विसर्जन होत है, सुनहु वीर हनुमान,
राम लखन सीता सहित, सदा करहु कल्यान।
कहेहु दण्डवत प्रभु सन, तुमहि कहहुँ करजोरि,
बार-2 रघुनाथकहिं सुरत करायहु मोरि।
नाथ एक वर माँगहुँ, सोई कृपा कर देहु,
जन्म-2 प्रभु पद कमल, कबहुँ घटै जनि नेहु।

सन्तान (पुत्र सुख के लिए)

पाँच बार नित्य रात्रि में सोते समय

मंगलमूरति मारुति नंदन, सकल अमंगल मूलनिकंदन
कौनसो काजकठिन जगमाहीं, जोनहिंहोय तात तुमपाहीं
कहा रीछपति सुन हनुमाना का चुप साधरहा बलवाना
पवनतनय बल पवनसमाना, बुधिविवेक विज्ञाननिधाना
कोमलचित कृपालु रघुराई, कपि केहि हेतुधरि निठुराई
जो प्रसन्न मोपर मुनिराई, पुत्रदेहु बल में अधिकाई
जबहि पवनसुत यह सुधिपाई, चले हृदय सुमरि रघुराई
रामकीन्ह चाहहि सोई होई, करै अन्यथा अस नहिंकोई
पुरवहु मैं अभिलाष तुम्हारा, सत्य-2 प्रण सत्य हमारा
जेहि विधि प्रभुप्रसन्न मनहोई, करुणासागर कीजै सोई
चरण कमल बन्दौ तिनकेरे, पुरवहु सकल मनोरथ मेरे
देखिप्रीति सुनि वचन अमोले, एवमस्तु करुणानिधि बोले
दशरथ पुत्र जन्म सुनि काना, मानहुँ ब्रह्मानन्द समाना
जाकर नाम सुनत शुभ होई, मौरे गृह आवो प्रभु सोई
प्रभु की कृपा भयहु सबकाजू, जन्म हमार सुफलभा आज
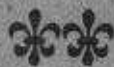
विवाह तथा नौकरी धन्धा के लिए

(प्रात: 5 बार नित्य-पाठ करना चाहिए)

जिमि सरिता सागर महं जाहीं,
यद्यपि ताहि कामना नाहीं।
तिमि सुख सम्पति बिनहिं बुलाए,
धर्म शील पहं जाहिं सुभाए।
जिन कर नाम लेत जग माहीं,
सकल अमंगल मूल नसाहीं।
करतल होहिं पदारथ चारी,
तेहि सियराम कहेउ कामारी।
जाकर जेहिपर सत्य सनेहू,
सो तेहि मिलहि न कछु संदेहु।
सो तुम जानहु अन्तरयामी,
पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी।
सकल मनोरथ होहिं तुम्हारे,
राम लखन सुनि भये सुखारे।
जब ते राम ब्याहि घर आए,
नित नव मंगल मोद बधाए।
मंगल भवन अमंगल हारी,
उमा सहित जेहि जंपत पुरारी।
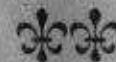
सौभाग्य तथा सब सुख प्राप्ति के लिए

✓ भव भेषज रघुनाथ जसु, जे गावहिं नर नारि।
तिन्हकर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिपुरारि॥

क्षेमकरी करी कर क्षेमविशेखी,
श्यामा वाम सुतरु पर देखी।
पुत्रवती युवती जग सोई,
रघुपति भक्त जासु सुत होई।
अचल होय अहिबात तुम्हारा,
जब लगि गंगजमुन जलधारा।
बारहि बार लाइ उर लीन्हीं,
धरि धीरज सिख आशिश दीन्हीं।
✓जो रघुपति चरणान चितलावै,
तेंहिसम धन्य न आन कहावै।
यह भाँति गौरि अशीश सुनि,
सियसहित हिय हर्षित अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि-पुनि,
मुदित मन मंदिर चली।
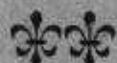
कन्या को वर मिलने के लिए

(कन्या को 16 साल की आयु से प्रातःकाल पाठ करना अति उत्तम होगा)

श्री रघुवीर विवाह, जो सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन्हकर सदा उछाहु, मंगलाय तनु राम जसु॥

✓कोमल चित अति दीन दयाला,
कारण बिनु रघुनाथ कृपाला।
✓जानहु ब्रह्मचर्य हनुमन्ता,
शिव स्वरूप श्री भगवन्ता।
✓जो रघुपति चरण चितलावै,
तेहिसम धन्य न आन कहावै।
राम कथा सुन्दर करतारी,
संशय विहग उड़ावनहारी।
उमा रमा ब्रह्माणि वन्दिता,
जगदम्बा सन्तति अनन्दिता।
पूजा कीन्ह अधिक अनुरागा,
निज अनुरूप सुभगवर माँगा।
सादर सियप्रसाद उर धरेऊ,
बोली गौरि हर्ष उरभरेऊ,
जाको जा पर सत्य सनेहू,
सो तेहि मिलहि न कछु संदेहू।

सुनि सिय सत्य असीस हमारी,
पूजहि मन कामना तुम्हारी।

पति अनुकूल सदा रह सीता,
शोभा खान सुशील विनीता।

रंगभूमि पर जब सिय पगधारी,
देखि रूप मोहे नर नारी।

भुवन चारदश भरेहू उछाहू,
जनक सुता रघुवीर विवाहू।

शकुन विचार धारि मनधीरा,
अब मिलिहि कृपालु रघुवीरा।

तौ जानकिहि मिलहि वर एहू,
नाहिन आलि यहाँ संदेहू।

सो तुम जानहू अन्तरयामी,
पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी।

मंत्रमहामणि विषय ब्याल के,
मेटत कठिन कुअंक भाल के।

अशरण शरण विरद संभारी,
मोहि जनि तजहुँ भक्त हितकारी।

मन जाहि राचौ मिलहि सो वर सहज सुन्दर सांवरो
करुणा निधान सुजान शील सनेह जानत रावरो